न्यूज एंड व्यूज
News & Views

खंड 14: सं. 1 | अर्धवार्षिकी आर एण्ड डी न्यूज़ बुलेटिन [केरेउअवप्रसं-बहरमपुर] | जून, 2020

संपादकीय

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी भारत में शहतूत कृषि हेतु एक प्रमुख अनुसंधान संस्थान है। यह संस्थान हितधारकों को अनुसंधनात्मक एवं विकासात्मकता सहयोग के साथ ही तकनीकी अनुसमर्थन भी मुहैया कराते आ रहा है। वैज्ञानिक दल के अथक प्रयासों से क्षेत्र में रेशम उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण विकास हुआ है। आलोच्य अवधि के दौरान, जब पूरा विश्व नॉवेल कोरोना वायरस अर्थात् कोविड-19 महामारी की आपदा से जूझ रहा था तब भी यह संस्थान तथा इसके अधीनस्थ इकाइयों द्वारा कोविड-19 के नियंत्रण हेतु सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अनुसरण करते हुए अनुसंधान एवं विस्तार कार्य को सतत जारी रखा। इस दौरान, सभी पूर्वोपाय का अत्यंत सावधानी पूर्वक पालन करते हुए सभी कर्मचारियों को सुरक्षित रहने की सलाह दी गई। इस आपदा के दौरान विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र के साथ ही साथ कृषि आधारित उद्योग शहतूत रेशम कृषि भी गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है और बाजार की स्थिति अच्छी नहीं थी एवं कोविड-19 लॉकडाउन के उपरांत से ही कौसे के मूल्य में निरंतर गिरावट दर्ज की गई। बारिश, बाढ़ प्रतिकूल मौसम जैसे पीड़क एवं रोग आपतन से भी कोसा उत्पादन, गुणवत्ता व मूल्य प्रभावित हुआ। इसी दौरान, नव विकसित प्रौद्योगिकियों अर्थात् एंटीफंगल पेप्टाइड के अनुप्रयोग से शहतूत की पर्ण स्पॉट एवं मूल विगलन के दमन के लिए नॉवेल प्रक्रिया (AFP-2); पर्यावरण एवं उपयोगकर्ता के अनुकूल प्रभावी सामान्य रोगाणुनाशी - निर्मूल; शहतूत पारिस्थितिक तंत्र में मृदा जैविक स्वास्थ्य हेतु नॉवेल, तीव्र एवं सरल मूल्यांकन पद्धति को पेटेंट करने हेतु आवेदन किया गया। इसके अतिरिक्त, उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार हेतु आशाजनक एचवाई एवं सूखा सहिष्णु शहतूत जीनप्ररुप; 12Y x BFC1 एक उन्नत संकर; क्षेत्र-विशिष्ट हेतु नए द्विप्रज डबल संकर (बहरमपुर एवं पश्चिम बंगाल) का नव आरंभ; रेशमकीट में उच्च आर्द्रता हेतु निर्णायक आणविक मार्कर; एआईसीईएम- IV चरण का प्रारंभिक प्रक्षेपण; मृदा स्वास्थ्य कार्ड कार्यक्रम; सुवर्णा प्रोटोटाइप; पीड़क प्रबंधन हेतु जैव नियंत्रण एजेंट आदि रेशम प्रौद्योगिकियों समेत प्रबल वैज्ञानिक आधार द्वारा संचालित किया गया। संस्थान द्वारा प्रतिकूल मौसमों में भी बहुप्रज एवं द्विप्रज नस्लों के लिए P1 रोमुच की आवश्यकता को पूरा करने का उत्तरदायित्व निभाया गया। वर्तमान समय में, संस्थान का संपूर्ण ध्यान निस्तरी के सुधार, उच्च तापमान एवं उच्च आर्द्रता सहिष्णु रेशमकीट नस्लों के विकास, रोग प्रतिरोध, उत्परिवर्तन प्रजनन, पर्ण की गुणवत्ता में सुधार आदि पर केंद्रित है। भविष्य के अनुसंधान कार्यक्रमों को आरंभ करने हेतु एप्टैमर प्रौद्योगिकी के माध्यम से पेब्रिन के निदान, उप-उत्पाद का उपयोग, उपयुक्त मशीनीकरण, बंजर भूमि का विकास, आईएफएस आदि पर अनुसंधान एवं विकास की अवधारणाओं की खोज की जा रही है। केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर के सभी वैज्ञानिकों को उनके अथक प्रयास हेतु धन्यवाद।

RIGHT TO INFORMATION
सूचना का अधिकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मुख्य संपादक : डॉ. वी. शिवप्रसाद (निदेशक)
संपादक : डॉ. दीपेश पंडित (वैज्ञानिक-डी)
सहायक संपादक : डॉ. मंजूनथ जी. आर. (वैज्ञानिक-सी)
सहायक श्री सुब्रत सरकार (त.स.)
श्रीमती एस. कर्मकार (त.स.)
हिंदी अनुवाद सुश्री टी. एन.टी. सिरीषा (आशुलिपिक)
श्री आर. बी. चौधरी (सहायक निदेशक [राभा])
श्री चंदन कुमार साव (कनिष्ठ अनुवादक हिंदी)

पौधारोपण "सम्बृध्वि"

$BC_2$59 उपजाति के कुल 28,000 शहतूत के नवोदभिद् पौध की आपूर्ति न्यू चुंगतिया, मोकोकचुंग, नागालैंड के समगुरी फार्म, दीमापुर से "मेसर्स सम्वरुडि" को की गई। नवोदभिद् पौध का पौधरोपण समतल भू-खंड वाले क्षेत्रों में पंक्ति प्रणाली का अनुसरण कर 4 फीट x 4 फीट के अंतराल पर किया गया। पहाड़ी या अनडुलेटिंग क्षेत्र में नवोदभिद् पौध का पौधरोपण 8 फीट x 8 फीट के अंतराल पर किया गया। लगभग 9 एकड़ भू-खंड में 4 फीट x 4 फीट के अंतराल पर 25,000 नवोदभिद् पौधा का रोपण तथा 4.50 एकड़ भू-खंड में 8 फीट x 8 फीट के अंतराल पर पौधारोपण कर कुल 13.5 एकड़ क्षेत्र में शहतूत पौधारोपण किया गया।

कार्यशाला

रेशम निदेशालय (सीउड़ी-बीरभूम-पश्चिम बंगाल सरकार) द्वारा दिनांक 26-02-2020 को कृषकों में जागरूकता पैदा करने हेतु "**ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रेशम कृषि की भूमिका**" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में दोनों अर्थात् शहतूत एवं तसर रेशम कृषि से जुड़े कृषकों ने भाग लिया। डॉ. दीपेश पंडित, वैज्ञानिक-डी एवं डॉ. एस. एन. बागची, वैज्ञानिक-डी, रेशम बीज उत्पादन केन्द्र, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल भी कार्यशाला में उपस्थित थे। साथ ही, राज्य रेशम कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक व अन्य अधिकारी, स्थानीय बीडीओ, बीरभूम जिले के कृषि कर्माध्यक्ष, मयूरेश्वर ब्लॉक के सह-सभापति, स्थानीय पंचायत प्रधान एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी कार्यशाला में उपस्थित थे। हालांकि, श्री आशीष कुमार बंद्योपाध्याय, कृषि मंत्री व आयुक्त, रेशम विभाग अपरिहार्य कारणों से कार्यशाला में नहीं आ पाएं। सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा अपने अभिभाषण में तसर संवर्धन एवं शहतूत रेशम उद्योग के महत्ता पर अपना-अपना विचार व्यक्त किया गया। राज्य रेशम विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने अभिभाषण में कृषकों हेतु उपलब्ध विभिन्न योजनाओं व तकनीकी पहलुओं पर विशेष तौर अर प्रकाश डाला गया। डॉ. पंडित द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रेशम कृषि की भूमिका पर व्याख्यान देते हुए अन्यान्य फसलों की तुलना में इसकी लाभप्रदता पर विचार व्यक्त किया गया। संवाद सत्र के दौरान, कृषकगण तकनीक, योजना एवं अर्थ से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विषय विशेषज्ञों के साथ संवाद तथा इसी क्रम में, विषय विशेषज्ञों द्वारा कृषकों के जिज्ञासा को उपयुक्त व समुचित उत्तर देकर दूर करने का हर संभव प्रयास किया गया।

न्यूज एंड व्यूज
News & Views

Vol. 14: No. 1 | **Half Yearly R&D News Bulletin [CSRTI-Berhampore]** | **June 2020**

Editorial

CSRTI-Berhampore, a premier research institute for mulberry sericulture in East & North East India, is providing technological support to the stakeholders with need-based R&D. The sincere efforts of scientific team have contributed significantly for the cause of sericulture industry in the region. During this period, the threat of novel corona virus *i.e.* COVID-19 being pandemic worldwide, this institute along-with its nested units continues its research & extension work following guidelines of Govt. to control of COVID-19. All the precautionary measures were being followed Scrupulously and stay-safe was advised to all the staff. Manufacturing and services sectors have been severely hit and mulberry sericulture being an agro-based industry has also been affected during this pandemic; the market conditions were not good and the cocoon prices were continuously dropping since the COVID-19 lockdown. The adverse climate like rain, flood, pest and disease incidences also affected cocoon production, quality and price. In the meantime, the newly developed technologies *viz*., a novel process (AFP-2) to suppress mulberry leaf spot and root rot through antifungal peptide application; an eco- and user-friendly effective general disinfectant- NIRMOOL; a novel, rapid and simple assessment method for soil biological health in mulberry ecosystem patent applications have been filed. Moreover, sericulture technologies including Promising HY & drought tolerant mulberry genotypes; 12Y x BFC1, an improved crossbreed; Novel introduction of region-specific bivoltine double hybrids (BHP & WB); Breakthrough molecular markers for high humidity in silkworms; Early launch of AICEM-IV phase; SHC programme; Suvarna prototype; Bio-control agents for pest management etc. driven by strong scientific basis were taken further to improve the productivity and quality. The institute also undertaken the responsibility to meet the requirement of P1 dfls for multivoltine and bivoltine breeds in the unfavorable seasons. Present focus of this institute are on Nistari improvement, development of high temperature & high humidity tolerant silkworm breeds, disease resistance, mutation breeding, leaf quality improvement etc. R&D concepts on diagnosis of pebrine through aptamer technology, by-product utilization, appropriate mechanization, waste land development, IFS etc. are being explored for undertaking future research programmes. Kudos to all the scientific team of CSRTI-Berhampore.

RIGHT TO INFORMATION
सूचना का अधिकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Chief Editor: Dr. V. Sivaprasad (Director)
Editor: Dr. Dipesh Pandit (Scientist-D)
Associate Editor: Dr. Manjunatha G.R (Scientist-C)
Assistance: Mr. Subrata Sarkar (TA)
Mrs. S. Karmakar (TA)
Ms. T. N.T. Sirisha (Steno)

Plantation "SAMVRUDI"

A total of 28,000 mulberry seedlings of BC_259 variety were supplied to "M/s SAMVRUDI" from Samaguri farm, Dimapur to New Chungtia, Mokokchung, Nagaland. The seedlings were planted in the areas which are plain land at a spacing of 4 ft x 4 ft following row system of planting. The seedlings were planted at a spacing of 8 ft X 8 ft in the areas which were hilly or undulating. Around 9 acres of land was planted with 25,000 seedlings at a spacing of 4 ft X 4 ft and 4.50 acres at spacing of 8 ft X 8 ft, thus covering a total area of 13.5 acres.

WORKSHOP"

Directorate of Sericulture (Suri-Birbhum-Govt. of West Bengal) has organized an workshop on 26-02-2020 on the theme "Role of Sericulture in Rural Economy" to create awareness among the farmers. Both the farmers of mulberry sericulture and Tasar culture were participated in the meeting. Dr. Dipesh Pandit, Scientist-D and Dr. S. N. Bagchi, Scientist-D, SSPC-Berhampore, WB participated in the meeting. Besides, Joint Director & other officials of State Sericulture Departments, Local BDO, Krishi Karmadhyakhya, Birbhum, Saha sabhapati, Mayureswar Block, Local Panchayat Pradhan and many others dignitaries were present in the meeting. However, Ashis Kumar Bandhyopadhyay, Agriculture Minister and Commissioner, Sericulture Department were not able to participate due to sudden urgent work. All the dignitaries in their deliberations highlighted on the importance of Tasar culture and mulberry sericulture. The Officials of State sericulture Department in their speech emphasized on technical aspects and different schemes available for the farmers. Dr. Pandit, delivered lecture on "Role of Mulberry sericulture on rural economy comparing with other agricultural crops in respect of its profitability". During interaction session, farmers interacted with the experts on different issues like technical, scheme & economics related issues which were suitably replied to the satisfaction of the farmers.

रेशम कृषि मेला
केरेउअवप्रसं-बहरमपुर (पश्चिम बंगाल)

केरेउअवप्रसं, बहरमपुर द्वारा एक रेशम कृषि मेला (आरकेएम) का आयोजन दिनांक 24 जनवरी, 2020 को रविन्द्र सदन, बहरमपुर में किया गया। रेशम कृषि मेले में स्वामी बिश्वमयानंद (तुषार महाराज), रामकृष्ण मिशन आश्रम, सारगाछि, बहरमपुर; श्रीमती मधुमिता चौधरी, आईएएस, वस्त्र आयुक्त, पश्चिम बंगाल सरकार; केंद्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य जनाब मो. सोहराब हुसैन; डॉ. मंजु बनर्जी, प्रिंसिपल, मुर्शिदाबाद मेडिकल कॉलेज (एमएमसी), डॉ. सुजाता बागची बनर्जी, प्रिंसिपल, के.एन. कॉलेज, बहरमपुर तथा डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक केरेउअवप्रसं, बहरमपुर उपस्थित थे। सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा इस अवसर पर रेशम कृषि के उत्तरोतर विकास एवं समृद्धि हेतु अपने-अपने विचार व्यक्त किया गया।

रेशम कृषि मेले का मुख्य आकर्षण प्रदर्शनी व तकनीकी सत्र था जिसकी सराहना मुख्य अतिथि समेत सभी गणमान्य अथितियों के साथ-साथ कृषकों ने भी की। नए विकसित शहतूत प्रजाति C2038, शहतूत पीड़क प्रबंधन के लिए जैव-नियंत्रण एजेंट, उत्तरावस्था कीटपालन हेतु शेल्फ कीटपालन प्रौद्योगिकी तथा सौरोनीर (सौर जल तापन इकाई) के साथ सुवर्णा (मोटर चालित चरखा) एवं कई अन्य महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। तकनीकी सत्र में, कृषकों द्वारा उनके समक्ष आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु वैज्ञानिकों व राज्य के अधिकारियों से सार्थक संवाद किया गया। रेशम कृषि मेले के दौरान, नई विकसित सामान्य रोगाणुनाशी – निर्मूल, मुख्य अतिथि व गणमान्य लोगों की उपस्थिति में प्रक्षेत्र मूल्यांकन हेतु कुछेक कृषकों में वितरित किया गया। इस अवसर पर नौ (09) पुस्तिका (बंगला) प्रकाशित कर कृषकों के मध्य संवितरण किया गया। इसके अतिरिक्त, 29 अधिकारियों / पदधारियों / कर्मचारियों को भी रेशम कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान हेतु प्रशंसा-पत्र प्रदान किया गया तथा वर्ष 2019-20 के दौरान पश्चिम बंगाल के 12 सर्वश्रेष्ठ कृषकों को वाणिज्यिक क्षेत्र तथा शहतूत बीज कोसा उत्पादन में उनके उत्कृष्ट उपलब्धियों हेतु प्रमाण-पत्र प्रदत कर सम्मानित किया गया ।

कार्यक्रम में विभिन्न रेशम-प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी भी प्रदर्शित किया गया जो कृषकों एवं आगंतुकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र बिन्दु रहा। इस अवसर पर, पिछले वर्ष के दौरान ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के सर्वश्रेष्ठ कोसा उत्पादक कृषकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय तथा राज्य रेशम विभाग के कीटपालक, एसएचजी, एनजीओ व अधिकारियों सहित कुल 239 प्रतिभागी उपस्थित थे।

रेशम कृषि मेला
क्षेरेउअके-कोरापुट (ओडिशा)

क्षेरेउअके, कोरापुट द्वारा रेशम कृषि मेला आयोजन 12 फरवरी, 2020 को अपने परिसर में किया गया। श्री खसरू आलम, वैज्ञानिक-बी द्वारा अपने स्वागत अभिभाषण में केंद्र में जारी कार्य और गतिविधियों का संक्षिप्त ब्यौरा सबके समक्ष रखा गया। उनके द्वारा कृषकों के आय में वृद्धि हेतु केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा विकसित नवीनतम तकनीकों को अंगीकृत करने का अनुरोध किया गया। डॉ. वी. लक्ष्मणन, वैज्ञानिक-डी ने अनुकूल मौसम के दौरान द्विप्रज संकरों के कीटपालन के महत्व पर विशेष जोर दिया। डॉ. दीपेश पंडित, वैज्ञानिक-डी द्वारा रेशम कृषि के माध्यम से जीविका सुरक्षा एवं विदेशी मुद्रा अर्जित करने में रेशम की उपयोगिता के संबंध में विस्तार से सभी को अवगत कराया गया। श्री जयंत घोष, वैज्ञानिक-डी ने कोसोत्तर प्रौद्योगिकियों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्री भगवान नायक, सहयक निदेशक, रेशम [रेशम निदेशालय], ओडिशा सरकार ने ओडिशा में शहतूत रेशम कृषि का विहंगावलोकन प्रस्तुत किया। उनके द्वारा राज्य में रेशम कृषि को बढ़ावा देने एवं इसके विकास हेतु विभिन्न योजनाओं से भी सभी को अवगत कराया गया। उन्होंने राज्य के रेशम कृषकों द्वारा उठाए गए उनके समस्याओं व सवालों का भी स्पष्टीकरण किया। डॉ. बी. राजगोपाला, क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू, कोरापुट एवं रेशम कृषि मेला के मुख्य अतिथि द्वारा कृषको से अपनी जीविका सुरक्षा हेतु उद्यमी तरीके से रेशम कृषि करने का आग्रह किया गया।

रेशम कृषि मेला
अविके-आइजल (मिजोरम)

रेशम कृषि विभाग, मिजोरम सरकार के सक्रिय सहयोग से अनुसंधान विस्तार केंद्र, आइजोल द्वारा रेशम कृषि मेला का आयोजन दिनांक 12.02.2020 को मिजोरम के लुंगेली जिले के अंतर्गत तवीपुई गांव में किया गया। डॉ. एल. पचाउ, वैज्ञानिक-डी व अनुसंधान विस्तार केंद्र के प्रभारी द्वारा मुख्य अतिथि डॉ. के. पछुंग. मिजोरम के दक्षिण निर्वाचन क्षेत्र लुंगलेई के विधायक, सम्मानीय अतिथि श्री लालरोजमा, निदेशक, रेशम कृषि विभाग, मिज़ोरम सरकार, विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ वैज्ञानिक व लुंगलेली कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. लालमुआनझोवी व इस अवसर पर उपस्थित सभी किसानों का स्वागत किया गया। उन्होंने, केंद्रीय रेशम बोर्ड की ओर से मिजोरम में रेशम उद्योग के विकास में मजबूत सहयोग प्रदान करने हेतु रेशम निदेशालय, मिजोरम तथा कृषकों के प्रति अपना आभार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि डॉ. के. पछुंगा, विधायक, लुंगलेई दक्षिण निर्वाचन क्षेत्र, मिजोरम ने राज्य में रेशम कृषि के विकास पर संतोष व्यक्त करते हुए रेशम कृषि के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को निरंतर बेहतर बनाने हेतु उनके सराहनीय प्रयासों के लिए केंद्रीय रेशम बोर्ड के साथ-साथ मिजोरम सरकार के रेशम कृषि विभाग के प्रति आभार प्रकट किए। उन्होंने यह भी कहा कि वे अपने फार्म में मूगा पौधरोपण किए हैं। श्री लालरोजामा, निदेशक, रेशम कृषि विभाग ने भी राज्य को निरंतर सहायता व प्रदान करने तथा कृषक प्रक्षेत्र में प्रौद्योगिकियों के प्रचार-प्रसार के लिए पूर्ण सहयोग जारी रखने हेतु केंद्रीय रेशम बोर्ड के प्रति आभार व्यक्त किए।

विशिष्ट अतिथि डॉ. लालमुआनज़ोवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक व लुंगलेई कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख ने रेशम कृषि हेतु मिजोरम की आदर्श जलवायु स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कृषकों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस बात पर अपना संतोष व्यक्त किया कि केंद्रीय रेशम बोर्ड द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र के साथ मजबूत संबंध स्थापित करने हेतु कदम उठाए गए हैं और उन्होंने यह उम्मीद जताई कि यह कदम व समन्वय रेशम कृषकों के वित्तीय स्थिति को बेहतर करने में मददगार साबित होगी। इस अवसर पर लुंगलेई जिले के 10 प्रगतिशील कृषकों को उनके द्वारा किए गए उत्पादन, उत्पादकता व बेहतर ढंग से पौधरोपण के रख-रखाव के लिए सम्मानित किया गया।

Resham Krishi Mela CSRTI-Berhampore (West Bengal)

CSRTI-BHP organized its Resham Krishi Mela (RKM) at Rabindra Sadan, Berhampore on 24th Jan., 2020. The Mela was graced with the presence of Swamiji Swami Biswamayananda (Tusar Maharaj), Ramakrishna Mission Ashram, Sargachi, Baharampur, Mrs. Madhumita Choudhury, IAS, Commissioner of Textiles, Govt. of W.B., Janab Md. Sohrab Hossain, CSB Member, Dr.Manju Banerjee, Principal, Murshidabad Medical College (MMC), Dr.Sujata Bagchi Banerjee, Principal K.N. College, Berhampore and Dr. V. Sivaprasad, Director, CSR&TI, Berhampore and their full supporting deliberation towards sericulture.

Major attraction was the exhibition & the technical session, which was highly appreciated by the chief guest and all dignitaries as well as by the farmers. Newly developed mulberry variety C2038, Bio-control agents for mulberry pest management, shelf rearing technology for late age rearing, and suvarna (motorized charkha) with souroneer (solar water heating unit) and many other this were exhibited. In the technical session, farmers interacted with the scientists and state officials for the solution of the problems encountered by them. During the event, *a newly developed general disinfectant– Nirmool*, was distributed to few farmers for field evaluation in the presence of chief guest and dignitaries. Nine (09) pamphlets (Bengali) were released and distributed among the participating farmers. Besides, 29 officers /officials /staff were felicitated with certificate of appreciation for their contribution in different fields of sericulture and 12 best farmers of West Bengal were awarded with certificates for their outstanding achievements in commercial as well as mulberry seed cocoon production during the year 2019-20.

Resham Krishi Mela RSRS-Koraput (Odisha)

RSRS, Koraput organised a Resham Krishi Mela at its premises on 12th Feb., 2020. Mr. Khasru Alam, Scientist-B in his opening remark inform briefly about the work and activities of the centre. He further urge the farmers to adopt the latest technologies developed by the Central Silk Board, for augmenting better income. Dr. V. Lakshmanan, Sci-D emphasized on the importance of rearing bivoltine hybrids during favourable seasons. Dr. Dipesh Pandit, Sci-D explained about livelihood security through Sericulture and potentials of silk to earn foreign exchange. Mr. Jayanta Ghose, Sci-D highlighted different aspects of post cocoon technologies. Mr. Bhagaban Nayak, Asst. Director, Seri (DoT), Govt of Odisha presented an overview of mulberry sericulture in Odisha. He further spoke about different schemes for promotion and development of sericulture in the state. He also clarified the points raised by the seri farmers of the state. Dr. B. Rajagopala, Regional Director, IGNOU, Koraput & Chief Guest of RKM urged the farmers to practice sericulture in an entrepreneurial manner for their livelihood security.

An exhibition displaying different seri-technologies were also showcased in the programme which evoked much interest among the farmers and visitors. On the occasion best farmers from the different districts of Odisha and Chhattishgarh were awarded for their achievement in cocoon production during last year. A total of 239 participants including rearers, SHGs, NGO and officials from Central and state Sericulture department attended the programme.

Resham Krishi Mela REC-Aizawl (Mizoram)

REC, Aizawl organized a Resham Krishi Mela with the active support of Department of Sericulture. Govt of Mizoram at Tawipui village under Lunglei district, Mizoram on 12.02.2020. Dr. L. Pachuau, Scientist-D and In-charge of REC welcomed the Chief Guest Dr. K. Pachhunga, MLA of Lunglei South Constituency, Mizoram, Guest of honour Shri. Lalrozama, Director, Department of sericulture, Govt. of Mizoram, Special Guest Dr. Lalmuanzovi, Senior Scientist & Head KVK, Lunglei and all the farmers on the occasion of Krishimela. On behalf of Central Silk Board, he expressed gratitude to DOS, Mizoram and farmers for extending strong co-operation in the development of Sericulture industry in Mizoram. The Chief Guest Dr. K. Pachhunga, MLA, Lunglei South Constituency, Mizoram expressed great satisfaction over the development of sericulture in the state and thanked CSB as well as DoS, for their utmost effort rendered in lifting up of rural economy through sericulture industry. He also added that he had raised Muga plantation in his farm. Shri Lalrozama, Director, Department of sericulture also express his gratitude to the Central Silk Board for extending help and support rendered to the state and to continue full cooperation towards dissemination of technologies at farmers field.

The special guest Dr. Lalmuanzovi, Senior Scientist & Head, KVK, Lunglei inspired the farmers highlighting the condition of Mizoram's climate which is ideal for taking up of sericulture. She expressed satisfaction that CSB had taken steps to build linkage with KVKs and hoped that this co-ordination will finally help sericulture farmers in lifting their financial status. On this occasion of Krishimela 10 nos of progressive farmers from Lunglei district were awarded for their success in production, productivity and good maintenance of their plantation.

संगोष्ठी

केरेउअवप्रसं, बहरमपुर ने दिनांक 19.02.2020 को बहरमपुर सेंट्रल नर्सरी (BCN) में रेशम निदेशालय, पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा **"रेशम कृषि व रेशम उद्योग में एसएचजी हेतु अवसर"** आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया। उक्त संगोष्ठी में राज्य सरकार के अधिकारीगण (ADM, NRLM), रेशम कृषि विभाग, पश्चिम बंगाल के अधिकारी व पदधारी, केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर के वैज्ञानिकगण, धागाकारक, बुनकर, बैंकर एवं सेल्फ हेल्प ग्रुप के सदस्यों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य जिले के अंतर्गत सेल्फ हेल्प ग्रुप के समर्थन द्वारा रेशम कृषि उद्यम में सुधार हेतु रेशम उद्योग के हितधारकों को एकजुट करना था। केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर द्वारा रेशम कृषि उद्यम हेतु मृदा से रेशम कृषि की मूल संरचना को प्रदर्शित करने हेतु एक प्रदर्शनी का भी अयोजन किया गया ।

परियोजना निदेशक (एनआरएलएम) – मुर्शिदाबाद ने कुछेक ऐसे उपाय बताए जिसके माध्यम से एनआरएलएम के तहत सेल्फ हेल्प ग्रुप उनके आर्थिक उन्नयन हेतु रेशम उद्योग उद्यमों को संचालित कर सकते हैं। ठीक इसी तरह, बैंक के प्रतिनिधि ने वित्तीय प्रावधानों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने के साथ ही साथ सभी को यह अवगत कराया कि सेल्फ हेल्प ग्रुप को रेशम कृषि से जुड़े उद्यम को आरंभ करने हेतु बैंको से ऋण सहायता मिल सकती है।

श्री एस. गोस्वामी, उप. निदेशक (प्रभारी), रेशम निदेशालय, मुर्शिदाबाद एवं डॉ. टी. दत्ता बिश्वास, वैज्ञानिक-डी द्वारा रेशम कृषि उद्योग में उपलब्ध विभिन्न उद्यम के अवसर से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। श्री रफीकुल इस्लाम, विस्तार अधिकारी एवं श्री एस. के. मैती, डीआई, रेशम निदेशालय, मुर्शिदाबाद ने सेल्फ हेल्प ग्रुप के सदस्यों को रेशम कृषि उद्यम से होने वाले आर्थिक लाभ के संबंध में विस्तृत रुप से समझाया। उन्हें यह भी अवगत कराया गया कि रेशम कृषि उद्यम आरंभ करने हेतु केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर द्वारा तकनीकी व प्रशिक्षण सहायता भी मुहैया कराई जायेगी। श्री सौरभ साहा, टेक्सटाइल डिजाइनर ने सेल्फ हेल्प ग्रुप को संबोधित करते हुए रेशम उत्पादों जैसे साड़ी, रूमाल आदि को डिजाइन करने के अवसरों व पद्धतियों से सभी को सुस्पष्ट तौर पर अवगत कराया। बुनाई व डिजाइन कार्य भी समूह में किया जा सकता है और इसके जरिए सेल्फ हेल्प ग्रुप के सदस्यों को अधिक लाभ की प्राप्ति हो सकेगी।

एडीएएम द्वारा इस प्रकार के संगोष्ठी के आयोजन करने हेतु अधिकारियों के प्रयास की सराहना करते हुए प्रसन्नता व्यक्त किए और यह उदगार व्यक्त किया गया कि इस तरह के आयोजन आज के समय की मांग भी है। उन्होंने यह अभिमत व्यक्त किया कि रेशम उद्योग में काफी संभावनाएं हैं। साथ ही, उन्होंने सेल्फ हेल्प ग्रुप के सदस्यों से रेशम से जुड़े उद्यम आरंभ करने हेतु अपील करते हुए ये आश्वासन दिया कि उन्हें जिला प्रशासन की ओर से हर संभव सहायता दी जाएगी।

प्रौद्योगिकी प्रदर्शन (टीडी)

शहतूत रेशम उद्योग पर दिसागाफु, दीमापुर, नागालैंड में दिनांक 27.02.2020 को एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुल 31 कृषक कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में, श्री इम्तिनोकोचुंग, तकनीकी सहायक, अनुसंधान विस्तार केंद्र, दीमापुर ने कृषकों को यह अवगत कराया कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड अपने विस्तार कार्यक्रमो के माध्यम से संस्थान द्वारा विकसित रेशम उद्योग की नई तकनीकों को प्रत्येक उपयोगकर्ताओं तक पहुँचाने हर संभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कृषकों को कीटपालन का अगली वसंत फसल, 2020 के दौरान उनके सामने आने वाली कठिनाइयों से भी अवगत कराया ।

उन्होंने नई संकर प्रजाति का लाभ, चॉकी कीटपालन के साथ ही साथ उत्तरावस्था कीटपालन के दौरान साफ-सफाई बनाए रखने, उत्तरावस्था कीटपालन में प्रोह अशन आदि के संबंध में स्थानीय भाषा में कृषकों को समझाया। श्री बाबुल मेच, तकनीकी सहायक अनुसंधान विस्तार केंद्र, दीमापुर एवं श्री अज़ियांग, तकनीकी सहायक ने कीटपालन गृह में साफ-सफाई बनाए रखने हेतु कृषको को जागरूक करते हुए यह अवगत कराया कि यदि, साफ-सफाई का रख-रखाव नहीं कि किया गया तो बीमारियां हो सकती है जिसके परिणामस्वरुप फसल को हानि होगी। उन्होंने परिपक्व रेशमकीट को अशन करने हेतु गुणवत्ता युक्त शहतूत पर्ण का उपयोग करने व कृषकों को नागालैंड के लिए अनुशंसित उपजाति BC_259 के नए पौधारोपण करने पर भी जोर दिए। नए पौधारोपण हेतु सैपलिंग की आपूर्ति अनुसंधान विस्तार केन्द्र द्वारा निःशुल्क की जाएगी। सभी कृषकगण ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और कार्यक्रम में उपस्थित व्यक्तियों के साथ सार्थक संवाद भी किए।

संगोष्ठी

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर तथा दूरदर्शन केंद्र, कोलकाता, पश्चिम बंगाल द्वारा राज्य की कृषि समुदाय के बीच रेशम उद्योग के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु संयुक्त रूप से "कृषि विस्तार को मास मीडिया समर्थन" योजना के अधीन दिनांक 21 फरवरी, 2020 रेशम उद्योग पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस फसल संगोष्ठी में कुल 230 प्रतिभागियों अर्थात् वैज्ञानिक व कृषकगण तथा इच्छुक पीजीडीएस छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम के शुभारंभ के पूर्व, डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर द्वारा 13 पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में जारी रेशम कृषि गतिविधियों पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी रेशम कृषि से जुड़े विषयों अर्थात् शहतूत कृषि, इसके उन्नत पैकेज, इसके रोग व पीड़क, रेशम कीटपालन, इसके रोग व पीड़क कोसा विपणन, धागाकरण व बीज अधिनियम के बुनियादी मुद्दों पर कृषकों एवं विषय विशेषज्ञों के पैनल के मध्य पारस्परिक संवाद के भांति संपन्न हुआ। केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीएसबी), रेशम निदेशालय (रेशम), पश्चिम बंगाल एवं रेशमकीट बीज उत्पादन केंद्र, बरहमपुर से शामिल विभिन्न विषयों के कार्मिकगण के विशेषज्ञ पैनल ने कृषकों से संवाद स्थापित कर उनके समस्याओं का उपयुक्त निदान व उपाय बताए। संगोष्ठी का प्रसारण दिनांक 19.03.2020 व 20.03.2020 को डीडी-किसान (बंगला) के कृषि दर्शन कार्यक्रम में किया गया था।

SEMINAR

CSRTI-Berhampore participated in a seminar on '**Opportunity for SHG in Sericulture & Silk Industry**", organized by DoS, Govt. of West Bengal at Berhampore Central Nursery (BCN) on 19.02.2020. The participants were the State Govt. officers (ADM, NRLM), officer and officials of Dept. of Sericulture, Govt. of West Bengal, Scientists, CSR&TI-Berhampore, reelers, weavers, bankers, and SHG members. The aim of seminar was to unite the stakeholders of silk industry for improvement of sericulture enterprise by the support of SHGs within the district. An exhibition was set up by CSR&TI, BHP for exhibiting soil to silk basic idea for sericulture enterprises.

Project Director (NRLM)-Murshidabad explained few conduits by which SHGs under NRLM can take sericulture enterprises for their economic improvement. Similarly, bank representative addressed the issues with the finance along with details of financial provision through which SHGs can get credit support for starting the sericulture enterprises.

Mr. S. Goswami, Dy. Director (I/c), DoS, Murshidabad and Dr. T. Datta Biswas, Scientist-D enlightened the participants with different enterprise opportunity available in sericulture industry. Mr. Rafikul Islam, E.O and Mr. S. K. Maity, DI, DoS, Murshidabad explained the SHG members about the enterprises with detail economic returns. It was also informed that technical and training support will be available from CSRTI-Berhampore, for initiating the sericulture enterprises. Sri Sourav Saha, Textile Designer addressed the SHGs and elucidate opportunities and methods for designing the silk products like sarees, handkerchief, etc. Weaving and designing can be done in group and will have huge profit margins for the SHG members.

Finally, ADM expressed his pleasure and appreciated the efforts of officers for organizing such seminar, which is need of the hour. He opined that silk industry has great potential and appealed to the SHG members for initiating sericulture enterprises and assured all kind of support from District administration.

Technology Demonstration (TD)

A TD programme was conducted on 27.02.2020 at Disagaphu, Dimapur, Nagaland on mulberry sericulture. A total of 31 farmers attended the programme. At the beginning, Shri Imtinokchung, TA, REC, Dimapur explained that the CSB through its extension machineries has been trying best to percolate the new technologies of sericulture developed by the institute to the end users. He informed the farmers regarding the difficulties likely to be encountered by them during next spring crop rearing, 2020.

He demonstrated in local language about the benefit of new hybrid races, cleanliness to be maintained during Chawki as well as late stage rearing, shoot feeding in late stage rearing etc. Shri Babul Mech, TA REC, Dimapur and Shri Aziang, TA, aware the farmers to maintain the hygienic condition in the rearing rooms, otherwise outbreak of diseases may be appeared which will cause the damage of the crop. They also emphasized the use of quality mulberry leaves feeding to the mature silkworm and urged the farmers to take up new plantation of recommended variety for Nagaland, BC_259 the saplings of which will be supplied By REC at free of cost. All the farmers were actively participated in the programme and interacted with resource persons in the programme.

SEMINAR

Central Sericultural Research & Training Institute, Berhampore and Doordarshan Kendra, Kolkata, West Bengal jointly organized a seminar on sericulture on 21st Feb., 2020 under the scheme **"Mass Media Support to Agriculture Extension"** for broadcasting for wider publicity of sericulture among the farming community of the state. A total of 230 participants consisting of scientists and farmers and interested PGDS students were participated in this crop seminar. Dr. V. Sivaprasad, Director, CSRTI-Berhampore, before initiation of the programme, delivered introductory lecture on sericulture activities in 13 Eastern & North-eastern states. The seminar was on interactive mode between farmers & panel of experts on sericulture related topics, viz., mulberry cultivations, its improved package, its disease & pests, silkworm rearing, its disease & pest cocoon marketing, reeling and basic issues on Seed Act. An Expert Panel consisting of personnel from different disciplines from CSR&TI(CSB), DoT (Seri), W.B and SSPC, Berhampore interacted with the farmers regarding their queries and suggest suitable remedial measures. The seminar was telecasted in Krishi Darshan programme of DD-Kisan (Bangla) on 19.03.2020 and 20.03.2020.

सफल रेशम कृषक की गाथा

श्री समीर चांद शेख
पिता: करीम शेख
ग्राम: दियारा, पोस्ट- भालकुंदि,
ब्लॉक - खड़ग्राम
जिला - मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल
आयु : 48 वर्ष
मोबाईल सं.: 8670869023

प्रारंभ में, श्री समीर चांद शेख अपने 1.5 बीघा भूमि में स्थानीय शहतूत उपजाति की खेती करते थे। रेशम कृषि करके उन्हें रुपये 45000 - 50000 वार्षिक आय प्राप्ति होती थी। तदुपरांत, उन्होंने वर्ष 2008-09 में अविके, नबग्राम/ कामनगर की सहायता से 2 '× 2' के अंतराल पर शहतूत प्रजाति S-1635 का पौधरोपण किए और उन्हें 45-48 मेट/हे/वर्ष की दर से पर्ण उपज की प्राप्ति हुई। उन्होंने केरेउअवप्रसं, बहरमपुर द्वारा संचालित आईएसडीएस के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया जिसके फलस्वरुप उन्हें शहतूत की खेती के साथ-साथ रेशमकीट पालन के लिए आधुनिक पद्धतियों को अंगीकृत करने में अत्याधिक सुगमता हुई। तत्पश्चात, इन्होंने शहतूत पौधरोपण का विस्तार 1.5 बीघा से 2.5 बीघा तक करने के साथ ही साथ कीटपालन की क्षमता को भी 750 रोमुच से बढ़ाकर 1400 रोमुच प्रति वर्ष कर लिए। फलस्वरूप, उनकी आय प्रति वर्ष रुपये 120000/- से बढकर रुपये 140000/- हो गई। हाल ही में, इन्होंने 32 '× 12' आकार का पक्का कीटपालन गृह का निर्माण उत्तरावस्था कीटपालन के लिए शेल्फ-कीटपालन प्रौद्योगिकी आरंभ करने हेतु अपने निधि से किए। वर्ष 2017-18 के दौरान रेशम निदेशालय, मुर्शिदाबाद व केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर द्वारा रेशम कृषि में उनके प्रदर्शन और समर्पण हेतु सर्वश्रेष्ठ रेशम कृषक के तौर पर उनका चयन कर केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर में आयोजित रेशम कृषि मेला, 2018 में सम्मानित किया गया। वे इस बात से अत्यंत खुश हैं कि रेशम उद्योग के जरिए वे गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) से गरीबी रेखा से ऊपर (एपीएल) तक का रास्ता तय करने के साथ ही साथ उनकी सामाजिक स्थिति को भी बेहतर किया। वे बहुत ही अभिनव कृषक हैं जो हमेशा नई विकसित प्रौद्योगिकियों को अंगीकृत करने हेतु तैयार रहते हैं। हाल ही में, उन्होंने केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर के प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण (टीओटी) कार्यक्रम के अंतर्गत 0.08 डेसिमल क्षेत्र में C-2038 शहतूत पौधरोपण किए हैं। उनके द्वारा रख-रखाव की जा रही नए उपजाति के पौधरोपण की उत्तरजीविता 90% है जिसके माध्यम से वे अपनी कीटपालन क्षमता को संवर्धित करने के साथ ही साथ रेशम कृषि से और आधिक लाभ की उम्मीद कर रहे हैं।

वर्ष	फसल	कीटपालित रोमुच/ वर्ष	कोसा (किग्रा./वर्ष)	कुल आय (रु./वर्ष)	शुद्ध आय (रु./वर्ष)
2017- 18	5	1100	447	156450/-	109515/-
2018- 19	5	1350	582	189150/-	128622/-
2019- 20	5	1450	655	212875/-	144755/-

न्यूज़ व व्यूज के लिए आलेख

निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर शोध निष्कर्षो, टीओटी, प्रक्षेत्र जांच, निदर्शन, कृषक दिवस, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों से संबंधित अर्धवार्षिकी समाचार बुलेटिन का नियमित तौर पर प्रकाशन करते हैं। संस्थान तथा पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी राज्यों के क्षेरेउअके व अविके में कार्य करने वाले अधिकारियों व पदधारियों से अनुरोध किया जाता है कि वे प्रकाशन हेतु निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल को लेख भेजें। पत्र-व्यवहार ई-मेल द्वारा csrtiber.csb@nic.in /csrtiber@gmail.com भी किया जा सकता है।

मानव संसाधन विकास कार्यक्रम

कृषक कौशल अद्यतन प्रशिक्षण

- केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर (जनवरी से फरवरी, 2020 के दौरान) में कौशल उन्नयन प्रशिक्षण के अंतर्गत तीन बैचों में कुल 62 कार्मिकगण प्रशिक्षित किए गए।

- अनुसंधान विस्तार केन्द्र, मोथाबाड़ी (पश्चिम बंगाल) एवं मंगलदोई (असम) में फरवरी, 2020 के दौरान **कौशल विकास** पर चार ऑफ कैंपस प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें लगभग 100 कार्मिकगण (25 / बैच) ने भाग लिया।

- फरवरी 2020 के दौरान कृषकों (जीविका -बिहार व पश्चिम बंगाल) के लिए कोसोत्तर प्रौद्योगिकी पर पांच ऑफ/ऑन कैंपस प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें लगभग 126 कार्मिकगण (~ 25 / बैच) ने भाग लिया।

आर एंड डी की समीक्षा बैठकें

- **51वीं अनुसंधान सलाहकार समिति** (27.01.2020)
53 वीं अनुसंधान परिषद की बैठक (13.03.2020)
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर तथा इसके अधीनस्थ इकाइयों के अनुसंधान प्रस्तावों / विस्तार / प्रशिक्षण / सतत गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा करने हेतु।

East North East Silk

CSRTIBerhampore

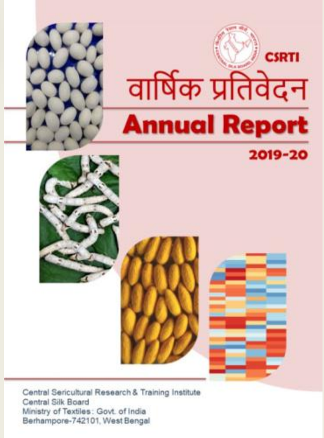

प्रकाशक
डॉ. वी. शिवप्रसाद
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान (केरेउवप्रसं)
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
बहरमपुर-742101, मुर्शिदाबाद पश्चिम बंगाल, भारत
03482-224713, फैक्स: +91 3482 224714 EPBAX: 224716/17/18 *csrtiber.csb@nic.in/csrtiber@gmail.com ; www.csrtiber.res.in*

Success Story of a Seri-Farmer

Samir Chand Sheikh
S/O Karim Sk
Vill- Diara, P.O- Valkundi,
Block- Khargram
Dist.- Murshidabad, West Bengal
Age : 48 years
Contact No. :8670869023

Shri Samir Chand Sheikh initially cultivated local mulberry variety in his 1.5 bigha land and his annual income from sericulture was between Rs.45000/- to Rs.50000/- per annum. Later, he planted S-1635 mulberry variety with 2'×2' spacing in 2008-09 with help of REC-Nabagram/ Kamnagar and achieved a leaf yield of 45-48 mt/ha/yr. He had undergone ISDS training programme at CSRTI-BHP which helped a lot in adopting modern package of practices of silkworm rearing along with mulberry cultivation. This motivated him to expand his mulberry plantation from 1.5 bigha to 2.5 bigha and has increased rearing capacity from 750 dfls to 1400 dfls per annum. As a result, his income has increased to the level of Rs.120000/- to Rs.140000/- per annum. Recently, he has constructed a pucca rearing house measuring 32'×12' out of his own funds for undertaking shelf-rearing technology for growing late age silkworms. For his performance and dedication for sericulture, he was selected as the one of the best farmers by DoS-Murshidabad & CSR&TI-BHP during 2017-18 and was felicitated in Resham Krishi Mela-2018 held at CSR&TI-BHP (WB). He is happy to share that sericulture facilitates him to move up from below poverty line (BPL) to above poverty line (APL) and has also given a social status. He is very innovative-kind of farmer and always ready to take any new technology. Recently he has planted 0.08 decimal of C-2038 mulberry saplings under ToT programme of CSR&TI-Berhampore. His new plantation with 90% survival is being maintained very nicely with, which he is expecting to increase his rearing quantum as well as much more returns from sericulture.

Year	Crops	Dfls Reared/ Year	Cocoons (kg/yr)	Total Income (Rs./yr)	Net Income (Rs./yr)
2017- 18	5	1100	447	156450/-	109515/-
2018- 19	5	1350	582	189150/-	128622/-
2019- 20	5	1450	655	212875/-	144755/-

ARTICLES FOR ***News & Views***

Director, CSRTI-Berhampore publishes half-yearly News Bulletin regularly on promising research findings, ToT, Field Trials, Demonstrations, Farmers' Day, Training Programmes and other important events. Officers and Staff working at main institute, RSRSs and RECs of Eastern & North Eastern states are requested to communicate articles to Director, CSRTI-Berhampore, West Bengal for publication. Communication may also be made by E-mail to csrtiber.csb@nic.in /csrtiber@gmail.com

Human Resource Development

Farmers Skill Updation Training

- A total of 62 personnel were trained in three batches under skill upgradation training at CSRTI-Berhampore (During Jan to Feb 2020).

- Four off campus training on **skill development** were organized at REC-Mothabari (West Bengal) and REC-Mongaldoi (Assam) during Feb 2020 and around 100 personnel (25/batch) were participated.

- Five off/on campus training on **Post Cocoon Technology** were organized for farmers (Jeevika -Bihar & West Bengal) during Feb 2020 and around 126 personnel (~25/batch) were participated.

R&D Meetings

- **51st Research Advisory Committee (27.01.2020)**
  53rd Research Council Meeting (13.03.2020)
  to review the progress of Research Proposals/ Extension/ Training/ Continuous activities of CSRTI-Berhampore & Nested units

East North East Silk

CSRTIBerhampore

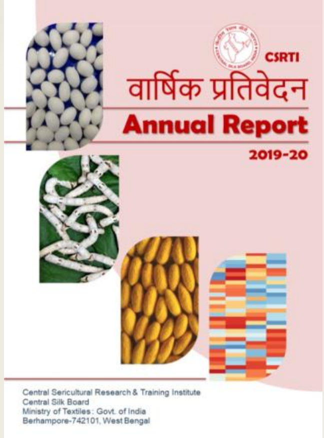

Published by
Dr. V. Sivaprasad, Director
Central Sericultural Research & Training Institute
Central Silk Board, Ministry of Textiles, Govt. of India Berhampore-742101, Murshidabad
West Bengal, India
03482-224713, FAX: +91 3482 224714
EPBAX: 224716/17/18
csrtiber.csb@nic.in/csrtiber@gmail.com ;
www.csrtiber.res.in